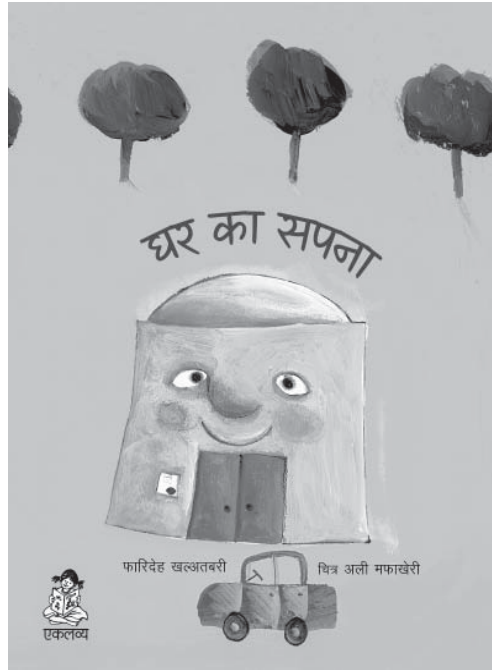


अद्भुत संवेदनाओं का कोलाज

उपासना

बहुत वक्त पहले दो ईरानी फिल्में देखी थीं - *चिल्ड्रन ऑफ हेवन* और *टर्टल्स कैन फ्लाई*। इन अद्भुत फिल्मों ने मेरी समझ का दायरा एक अलग ही तरीके से खोल दिया। सच कहूँ तो, जिस तरह से ये फिल्में आगे बढ़ती हैं, मुझे ऐसा लगता रहा जैसे मैं दो-ढाई घण्टे तक कोई सुन्दर किताब पढ़ती रही। संवेदनाओं के गहन स्तरों पर काम करने वाली ये फिल्में, बेहद शाइस्तगी से सामाजिक उथल-पुथल को मानो विवरणात्मक नोट्स की तरह दर्ज करती जाती हैं। इन फिल्मों को देखने के बाद ईरान के बाल साहित्य को जानने की इच्छा तीव्र हो गई थी। लेकिन वहाँ की भाषा से अनभिज्ञ होने की वजह से मैं उन तक पहुँच नहीं पा रही थी।

फिर मेरा वास्ता *एकलव्य* द्वारा प्रकाशित कुछ अनुदित ईरानी बाल साहित्य की पुस्तकों से पड़ा। इनमें सबसे पहले मैंने फारिदेह खल्सतबरी को पढ़ा और लगातार उनकी 4-5 किताबें पढ़ डालीं। इन कहानियों को पढ़ते हुए मन ही मन कितने सारे प्रश्न, कितने उत्तर, कितनी उलझनें, कितने दृश्य...बहुत देर तक साथ-साथ चलते रहे, जिन्हें मैं लिखती चली गई।



घर का सपना

इस किताब का शीर्षक बहुत-से अर्थों से भरा हुआ है। किन्तु पहली बार यह नाम सुनकर कुछ अजीब-सा लगता है - घर का सपना? क्या घर का भी कोई सपना होता होगा? हाँ, शायद होता तो होगा ही... वैसे ही

जैसे किसी मनुष्य का सपना! जैसे किसी देश का सपना! कहानी शुरू होती है घर की एक ख्वाहिश से।

घर में रहने वाले लोग जल्द ही वहाँ से जाने वाले थे, इस वजह से घर दुखी था। जल्द ही उस घर में दूसरे लोग आकर रहने वाले हैं। पर, घर स्थिरता चाहता है। वह ऐसा परिवार चाहता है जो उससे प्यार करे, उसमें हँसी-खुशी रहे और उसे सचमुच अपना घर समझे। बार-बार लोगों का जाना और नए लोगों का आना, उसे परेशान करता है। वह अपने आसपास के घरों को अपने स्थिर परिवारों के साथ सुख से रहते देखता था और सोचता था... काश! वह भी ऐसे ही रह पाता। घर की ख्वाहिश थोड़ी अनोखी लगती है, पर देखा जाए तो यह कोई असामान्य ख्वाहिश नहीं है। दीवारों के एक छोटे-से घेरे में एक परिवार खुशी से रहता है। बिना दीवारों का एक घर, देश भी तो होता है न?

घर का मालिक कुछ स्वार्थी और बदमज़ा-सा एक शख्स है। पैसों की चाह में

वह किरायेदारों को हटाता रहता है। घर यह जानता है कि इस मालिक के रहते स्थिरता पाने का उसका ख्वाब शायद कभी पूरा न हो पाएगा। फिर? उसके बाद क्या? आखिर एक शुष्क दीवारों वाला खामोश घर कर ही क्या सकता है? पर कहानी की चाबी वास्तव में इसी सवाल में छुपी है कि एक घर शान्ति और खुशी पाने की अपनी चाह को पूरा करने के लिए क्या-क्या तरकीबें अपनाता है। क्या घर का यह सपना वाकई पूरा हो पाएगा? यह एक दिलचस्प कहानी है।





अशान्ति जैसे हालात बने हुए हैं। इसके बरअक्स सोचें तो, लम्बी सरहदों वाला बेदिवारों-दर का घर, आखिर खुशी और अमन की ख्वाहिश क्यों न रखे? ढूँढने और पढ़ने पर यह भी मालूम हुआ कि उस मुल्क में खुलेआम ख्वाहिशों, सपनों और बगावत पर सख्त पाबन्दी है। लेकिन एक कलमघिस्सु की परेशानी यही है कि यदि वह बगावत और ख्वाहिशों की बातें न करे तो फिर वह

खुशदिल घर की शक्ल, उसके भीतरी भावों के साथ बदलते चेहरे की मुद्राएँ - इन सबका बहुत-ही खूबसूरत चित्रण है। अली मफाखेरी ने गाढ़े रंगों का प्रयोग किया है ताकि आँखों में न चुभें। घर की ख्वाहिश की तरह ही इस पुस्तक के चित्रों के रंग - गाढ़े, व्यग्र किन्तु कोमल हैं! कवर पर पीला रंग अलग-अलग शेड में इस्तेमाल किया गया है। किताब के अन्दर भी पीले रंग की अधिकता है - शायद रोशनी के लिए या शायद इसलिए कि घर उम्मीद और भावुकता से भरा है।

यदि इस कहानी की भीतरी तहों में जाएँ, तो हम पाते हैं कि इस घर का भौगोलिक परिवेश ईरान के किसी कस्बे का आस-पड़ोस है। पिछले कई वर्षों से ईरान में अस्थिरता, युद्ध,

क्या करे? वैसे दुनिया के ज्यादातर घर ऐसे ही होते जा रहे हैं। तो मोहतरमा फारिदेह खल्तअतबरी ने अपनी बात कहने के लिए बच्चों की जुबान चुनी। कहानियाँ सुनाने के लिए बतौर श्रोता, उन्हें बच्चे अधिक प्रिय और ज़हीन लगे। अपने सपनों को बाँटने के लिए बच्चों से अधिक मुफीद कौन हो सकता है भला? पुर-उम्मीद दिनों के ख्वाबों को आगे लेकर चलने का काम आखिर इनका ही तो है।

जल्द बहुत जल्द

इस कहानी की शुरुआत एक प्रश्न से होती है। सवाल एक बच्ची ने पूछा है। जवाब उसकी माँ देती है। माँ का जवाब उम्मीद भरी अनिश्चितता में डूबा हुआ है। और वही अनिश्चित-सा खोया हुआ जवाब, इस कहानी का

शीर्षक है... *जल्द बहुत जल्द!* बहुत कम शब्दों की यह एक बहुत लम्बी कहानी है। राजनैतिक अस्थिरता और विस्थापन से इसके सिरे जुड़े हुए हैं। इस कहानी का कमाल यह है कि इसमें बुनी हुई चुपियाँ और कभी-कभी कोई एक शब्द भी इस कहानी के समानान्तर दूसरी छोटी कहानी रच देता है। जैसे कि बच्ची पूछती है, 'अबू कब आएँगे?' जवाब में लिखा है, 'अम्मी सिहर उठी।' और इतने से जवाब से ही पाठक के मन में सवाल का गुच्छा खुलने लगता है। साथ ही साथ, उनके जवाब भी।

बच्चों के सवाल बच्चों जैसे ही होते हैं - सीधे, स्पष्ट... बिना पेंच-ओ-खम के। शायद इसलिए इन सवालों के जवाब देना सबसे मुश्किल काम होता है। माँओं के पास बच्चों के इन मुश्किल सवालातों और ख्वाहिशों के लिए पीढ़ियों से आजमाया हुआ

बना-बनाया जवाब तैयार रहता है, "जल्द बहुत जल्द!" पूरी कहानी में इस जवाब की अनुगूँज है। जाने यह कैसी जल्दी है, जो पूरी होने में नहीं आती? बच्ची अपनी माँ से पिता के विषय में पूछती है और माँ अपने बचपन की स्मृतियों में खो जाती हैं। उन स्मृतियों में एक छोटी बच्ची अपनी माँ से अपनी दोस्त की गुड़िया जैसी खूबसूरत गुड़िया की माँग करती है। बदले में माँ उसे मिठे बहाने की पर्ची थमा देती है, "जल्द रानी, बहुत जल्द!" हालाँकि, बच्ची धीरे-धीरे समझने लगी कि यह 'जल्द बहुत जल्द' का सफर वास्तव में बहुत लम्बा है।

किसी भी समाज में इससे बड़ी विडम्बना क्या हो सकती है जब बच्चे अपने सवालों की निरर्थकता को समझने लगें? कहानी में, कहानी के समानान्तर एक नुकीला सवाल चुभता रहता है कि 'अबू कहाँ हैं?' बच्ची के पिता कहाँ हैं? बच्ची की माँ के पिता भी कहाँ थे? यह कहानी इस बात का सच्चा दस्तावेज़ है कि युद्ध के निरन्तर अँधेरे में कितनी पीढ़ियाँ, कितने अबू खो जाते हैं! शब्दों के बेहद किफायती इस्तेमाल से भी, हमें घर का माहौल, रोज़ी-रोटी और आसपास के माहौल की बखूबी

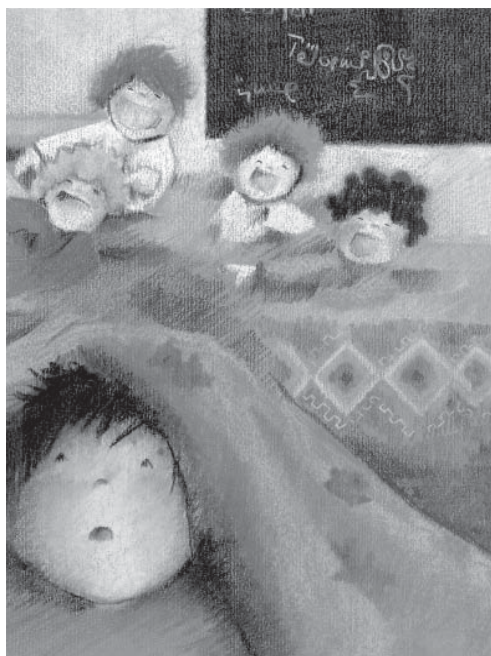


जानकारी हो जाती है। फारिदेह खल्लतबरी के लेखन की सबसे खूबसूरत बात यह है कि वे मनुष्य की भीतरी भावनाओं - खामोशी और अकेलेपन को बेहद बारीकी-से पकड़ती हैं। लेकिन ये भाव, यह अकेलापन, ये पीड़ाएँ इकहरी नहीं हैं। समाज, समय और दुनिया की हिंसा से जूझते ये चरित्र जिजीविषा से भरे हैं। इनके बोल-चाल और रंग-ढंग से अस्थिरता से जूझते देश की तस्वीर सहज ही उभर आती है।

इस कहानी के चित्र अली नामवर द्वारा बनाए गए हैं। मुझे ये चित्र खूबसूरत, मगर थोड़े उलझाने वाले लगे। मनुष्यों की आकृतियों में कभी मक्खी की छायाएँ उभरती दिखीं, कभी चिड़ियों की, तो कभी तितलियों की! लेकिन पंखों की उपस्थिति निश्चित है। किताब के शुरुआती पन्नों पर हरे रंग का इस्तेमाल किया गया है, पर क्रमशः बाकी सारे रंग नेपथ्य में जाते से लगे। सिर्फ काले और लाल की संगत लगातार बनी रही, जो आकर्षक लगी।

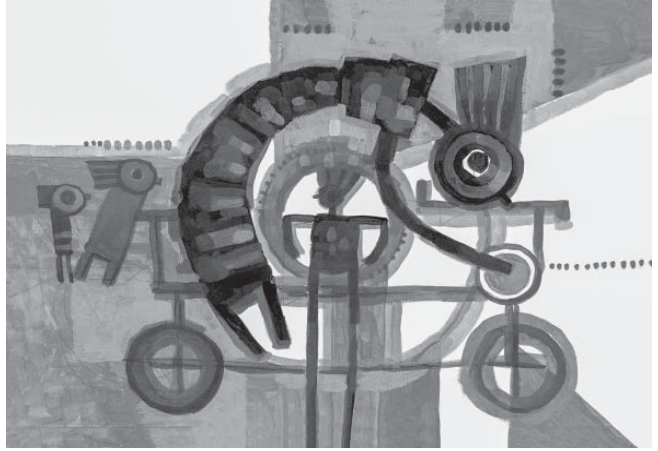
अँधेरे का भूत

अँधेरे का भूत एक दिलचस्प कहानी है। साथ ही, यह सामाजिक एवं भावनात्मक शिक्षण पर बहुत गैरमालूम ढंग से बात करती है। देखा जाए तो यह व्यक्ति और समाज के बीच सम्बन्धों में मौजूद सीमाओं की बात करती है।



अँधेरे से डरने वाले बच्चे को उसके दोस्त अजीबोगरीब हरकतों से डराते हैं और उसका मज़ाक उड़ाते हैं। वे उसे 'नन्हा चूहा' कहते हैं। वह डरता है। गिरते-पड़ते घर की ओर जाता है। उसके कपड़े गंदे हो गए थे, फट गए थे और चोटों से खून बह रहा था। तभी कहानी में एक मोड़ आता है - अँधेरे के भूत से बच्चे की दोस्ती हो जाती है। दोस्ती होना तो एक बड़ी सुन्दर बात थी, पर इसके बाद जो हुआ, वह गड़बड़ था। अँधेरे के भूत से दोस्ती होने के बाद, होना यह चाहिए था कि बच्चा अपने डर से

बाहर निकल आता और आत्मविश्वासी बनता। परन्तु डर से निकलते ही बच्चे के ज़हन में जो पहला खयाल आया, वह बदला लेने का था। अब अँधेरे का भूत इस नन्हे बच्चे के कहने पर दूसरे बच्चों को डराता और परेशान करता है। बच्चे ने खुद को मज़बूत



बनाने की बजाए दूसरों को परेशान करना चुना। पर गलत होकर गलत के खिलाफ खड़े होना... सही नहीं है। आगे कहानी में जो हुआ, वह दिलचस्प है।

किताब में नसीम आज़ादी द्वारा बनाए गए चित्र रुचिकर हैं। कलर पेंसिल से बने धुंधले विज़न के चित्रों में चेहरे के हाव-भाव पर बढ़िया काम किया गया है।

जागता सपना

“हाँ, मैं एक स्वप्नदर्शी हूँ, क्योंकि स्वप्नदर्शी वह व्यक्ति होता है जो केवल चाँदनी में ही अपना रास्ता खोज सकता है और उसकी सज़ा यह होती है कि वह बाकी दुनिया से पहले भोर देख लेता है।”

- ऑस्कर वाइल्ड

जागता सपना फारिदेह खल्मतबरी द्वारा लिखी गई एक खूबसूरत कहानी है। यह एक छोटी बच्ची और उसकी दादी के बीच के रिश्ते तथा सपने साझा करने की कहानी है। कहीं-कहीं यह कहानी जादुई रहस्य जैसी लगने लगती है। दादी बच्ची को ‘नन्ही जीनियस’ कहती हैं और बच्ची इस बात पर पूरे मन से विश्वास करती है। लेकिन जब वह स्कूल जाने लगती है तो शिक्षिका उसका नाम पूछती हैं। बच्ची अपना नाम ‘नन्ही जीनियस’ बताती है, जिस पर शिक्षिका उस बच्ची को समझने की बजाए ज़ोर-से डाँट देती हैं। इस वजह से बच्ची सबसे रूठ जाती है। रूठी हुई बच्ची मिट्टी से बहुत सारी कलाकृतियाँ बनाती है। अपना समय वह इन्हीं चीज़ों में बिताती है। एक बार बच्ची अपने नाम ‘जीनियस’ पर सन्देह भी

करती है, पर दादी को उसके जीनियस होने पर कोई शक-शुब्हा नहीं! जब बच्ची दादी से 'जीनियस' का अर्थ पूछती है, तो दादी का उत्तर गौर करने लायक होता है। बच्ची के पिता कहते हैं... "जीनियस का अर्थ है, ऐसा इन्सान जो दूसरों से ज़्यादा अक्लमन्द हो।" बच्ची की माँ कहती हैं... "जीनियस का अर्थ है, ऐसी चीज़ें करने वाला इन्सान जो और कोई नहीं कर सकता।" पर उसकी दादी कहती हैं... "जीनियस का अर्थ है, सिर्फ़ तुम, मेरी बच्ची सिर्फ़ तुम।"

किसी बच्चे को हम उसकी व्यक्तिगत विभिन्नता के साथ स्वीकारें, उसकी विशिष्टता का जश्न मनाएँ और उस पर आस्था रखें, इससे सुन्दर चीज़ और क्या हो सकती है? दादी इस बात को गहराई से समझती हैं इसलिए उनकी 'जीनियस' की परिभाषा में किसी से बेहतर होना नहीं है, बल्कि वह होना है जो एक बच्चा अपनी वास्तविकता में है।

इस बीच, गर्मी की छुट्टियों में जब बच्ची दोबारा दादी के यहाँ जाती है, तो दादी की झुर्रियों भरी हथेलियों के बीच उसे एक रास्ता दिखाई देता है। दादी बच्ची से कहती हैं, "इस रास्ते पर चलती रहो जब तक इसका अन्त नहीं आ जाता।" और इसी रास्ते पर चलते हुए बच्ची के मन में सपनों के बीज पड़ चुके थे। हथेली की उस लकीर पर चलते हुए बच्ची ने जो सपना देखा, असल में वो वह सपना

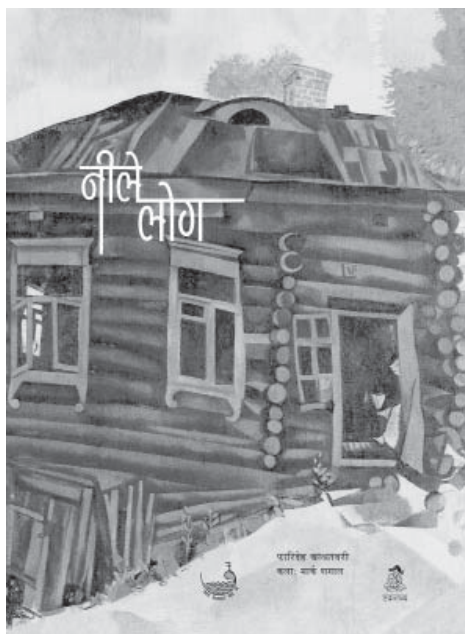
था जिसे मिट्टी से मूर्तियाँ बनाते हुए वह लगातार टुकड़ों में जी रही थी। अली नामवर द्वारा बनाए गए चित्र कहानी को विभिन्न अर्थ और आयाम देते हैं।

नीले लोग

इसका शीर्षक पढ़ने के बाद सबसे पहले मेरी इच्छा नीले रंग का अर्थ जानने की हुई। नीला रंग अपनी उपस्थिति से किस भाव को अभिव्यक्त करता है? इस रंग का जो अर्थ है, पूरी कहानी पढ़ने के बाद थोड़ा उलझाने वाला लगता है। रंग के अर्थ को समझने से पहले, कहानी पर चलते हैं। एक बच्ची एक सुबह उठती है और देखती है कि सभी लोग नीले रंग के हो गए हैं - अम्मी, अब्बू, स्कूल के टीचर, खाला और बच्चे सब नीले रंग के हैं। आखिर, सभी लोग नीले रंग के क्यों दिख रहे हैं? इन सबके बीच से गुज़रते हुए, आखिर में वह अपनी नानी के बगीचे में पहुँचती है। सेब के पेड़ के नीचे बहती नदी में बच्ची ने अपना प्रतिबिम्ब देखा - उसके दो पंख उग आए हैं।

पंख क्यों उग आए, इस पर विचार करते हुए मैं कहानी में पीछे गई। बच्ची को सब नीले क्यों दिख रहे हैं? क्या बच्ची मर गई है? इससे पहले कि मैं इस पर कुछ कहूँ, पहले मैंने पढ़ा कि कहानी की लेखिका इस पर क्या कहती हैं,

"लड़की अकेले मर रही है। उसके



आसपास कोई भी अपना नहीं है, यहाँ तक कि उसके अपने अम्मी-अब्बा और रिश्तेदार भी अपने-अपने कामों में व्यस्त हैं। उसने अपने आसपास बहुत सारे लोगों को देखा पर वे सब-के-सब नीले हो चुके थे। उसके साथ पढ़ने वाले बच्चे और टीचर - सभी बहुत व्यस्त हैं और कोई भी उसे याद नहीं करता, या उसकी कमी महसूस नहीं करता। हर जगह यही स्थिति है। अन्त में, उस लड़की को महसूस होता है कि वह मर चुकी है और पंखों वाली परी बन गई है।

“मेरे खयाल से मार्क शगाल का भी आसपास के बेदिल या हृदयहीन लोगों

को लेकर कुछ ऐसा ही विचार था क्योंकि उनके चित्रों में बहुत-से नीले लोग हैं। उनकी यह सोच, कहानी और मेरे दिमाग में जो था, उसके साथ पूरी तरह से मेल खाती है। मैंने कहानी को चित्रित करने के लिए कई चित्रकारों से सम्पर्क किया लेकिन मैं उनके काम से सन्तुष्ट नहीं थी।

“अन्त में, मैंने शगाल की पेंटिंग्स का इस्तेमाल किया। किताब के टाइटल के लिए मैंने जो पेंटिंग चुनी, वह दर्शाती है कि इन्सान आधे सामान्य हैं और आधे नीले। आम तौर पर हम उनका केवल सामान्य वाला हिस्सा ही देखते हैं और यह महसूस ही नहीं कर पाते कि वे कितने निर्दयी हो सकते हैं। मैंने लेखक को दर्शाने के लिए तोते को चुना है और शगाल को वैसे ही रखा है, जैसे वे हैं - एक वास्तविक इन्सान। हर पेज के लिए सही पेंटिंग का चुनाव करने में मुझे महीनों लग गए और अब जब भी मैं इस किताब को उठाती हूँ तो मज़ा आता है क्योंकि जो मैं महसूस करती हूँ, वह इसमें दिखता है।”

इसे पढ़ने के बाद भी, मैं पूरी तरह लेखिका से सहमत नहीं हो पाती। कहीं-कहीं मेरे विचार उनसे भिन्न हैं, जैसे कि बच्ची मरने वाली नहीं है बल्कि मर चुकी है। यह जादुई यथार्थ जैसा कुछ है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि

जब कोई कहानी लिखे जाने के दौर से पूरी होकर निकल जाती है, तब वह लेखक की नहीं रह जाती बल्कि पाठक की हो जाती है। अलग-अलग पाठकों के पाठ भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। बाज़ दफा कहानी वह नहीं कहती जो लेखक कहना चाहता है, बल्कि अच्छी कहानी वही होती है जो लेखक के हाथ से छूट जाए और वह कहे जो खुद कहना चाहती है। इसलिए बजाए उस पर विश्वास करने के जो लेखिका कह रही हैं, मैंने वह सुनना चुना जो कहानी कह रही थी - बच्ची मर चुकी है। जब वह कमरे से बाहर आई तो पहली चीज़ जो उसे महसूस हुई कि उससे कोई बात नहीं कर रहा, न ही उसकी तरफ कोई देख रहा है। शायद

इसलिए क्योंकि वह किसी को नज़र ही नहीं आ रही थी। लोग नीले रंग के क्यों हैं? जैसा लेखिका ने कहा है, “नीला रंग मेरे लिए एक भावनारहित रंग है, जैसे आकाश नीला है और समुद्र भी नीला है। दोनों ही खूबसूरत दिखते हैं और आकर्षित करते हैं। हम पानी में तैरते हैं, मज़ा उठाते हैं और अचानक पानी हमें अपनी ओर खींच लेता है और चुपचाप मार देता है। आसमान के साथ भी कुछ ऐसा ही है।”

इस बात को मैं थोड़ा अलग ढंग से समझना चाहती हूँ। नीला रंग दिल के घावों को भरने वाला रंग भी होता है। गहरे नीले रंग की छाया विचार प्रक्रियाओं की टेढ़ी-मेढ़ी पगडण्डियों को दुरुस्त करती है। किताब में प्रयोग



हुए चित्र मार्क शगाल की पेंटिंग्स हैं जिनमें ज़्यादातर गहरे नीले रंग की छायाएँ ही हैं। दूसरी ओर देखें, तो नीले रंग का आसमान और समुद्र जैसा ही जीवन भी अनन्त और अन्तहीन है। इसलिए चीज़ों या मनुष्यों के पीछे छूट जाने पर भी, जीवन की निरन्तरता पर कोई फर्क नहीं पड़ता। कुछ पल को रुककर यह फिर चल पड़ता है। वैसे भी, खोए हुए को भुलाकर आगे बढ़ना ही जीवन का स्वभाव है। यह एक शाश्वत सत्य है, पर पीछे छूट गए लोगों के लिए यह सत्य पीड़ादायक है। बच्ची जीवन से छिटक गई है। वह हल्के पंखों के साथ हवा में उड़ने वाली है। पर धीरे-धीरे उसे यह एहसास होता है कि सब उसे भूल चुके हैं। उसके न होने से अब किसी को फर्क नहीं पड़ रहा। यहाँ एक और अर्थ सम्भव है। जिस तरह पानी अचानक हमें डुबो सकता है, आसमान में अचानक तूफान उठ सकते हैं, वैसे ही अचानक बच्ची गुज़र गई। जीवन से अलग हो चुकी बच्ची, हर किसी के पास से हवा की तरह गुज़रती है, पर लोग उसे अदृश्य हवा की भाँति ही देख नहीं पाते।

मार्क शगाल की एक प्रसिद्ध पेंटिंग

है - द ब्लू हाउस। दिलचस्प बात यह है कि मार्क शगाल का भी प्रिय रंग नीला ही था। उदासी, अकेलेपन और लोक की विविध छवियों को मार्क शगाल ने नीले रंग में बखूबी उतारा है।

ईरान हमारा नज़दीकी पड़ोसी है। भारत और ईरान के बीच आना-जाना सदियों से होता आ रहा है। फिर भी हम वहाँ की कुछ ही चीज़ों को जानते-समझते हैं, और ज़्यादातर चीज़ें शायद हमारे जानने-समझने से बहुत दूर हैं। खासकर, राजनैतिक उथल-पुथल के इस भीषण दौर में, यह जानना कि पीढ़ियों से वहाँ के बच्चे क्या देखते और सहते आ रहे हैं, किस तरह का उनका बचपन है - निहायत ज़रूरी है। क्योंकि संवेदना के स्तर पर जुड़ने का पहला चरण जानना और समझना ही होता है। साहित्य यह काम बखूबी करता है। *एकलव्य* द्वारा हिन्दी में उपलब्ध कराई गई फारिदेह की ये किताबें इस बात को निस्सन्देह ही सुनिश्चित करती हैं। लेखिका की आगामी किताबों का इन्तज़ार रहेगा।

उपासना: कुछ वर्षों के अध्यापन के पश्चात् अब स्वतंत्र लेखन करती हूँ। उनके दो कहानी संग्रह, एक बाल उपन्यास तथा एक बाल नाटक प्रकाशित हुए हैं। 'भारतीय ज्ञानपीठ नवलेखन' पुरस्कार सहित दो अन्य प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त।

सभी चित्र इन पुस्तकों - *घर का सपना*, *जल्द बहुत जल्द*, *अँधेरे का भूत*, *जागता सपना* और *नीले लोग* से साभार।